International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 13-05-2024, Accepted: 05-06-2024, Published: 28-06-2024
Volume 6, Issue 1, 2024, Page No. 18-20

कबीर का जनमानस पर प्रभाव

कंवराज राम
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, गिड़ा, बालोतरा, राजस्थान, भारत

सारांश
आज समाज हिंसा आतंक साम्प्रदायिकता जातिवाद भाषावाद की आग मे झुलस रहा है। ऐसे समय हमारा संत साहित्य जनमानस को शीतलता और एक जीवन दृष्टि प्रदान करता है। इस साहित्य को अपना कर चिंतन–मनन कर हम अपने कलुषित मन का परिष्कार कर सकते है। उनकी वाणियाँ षाष्व और सर्वकालिक है। निर्गुण और सगुण काव्यधाराओं का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। मैं उसमें से अल्प अंश लेकर कबीर पर अपनी बात आपके सामने प्रस्तुत करने का छोटासा प्रयास करने जा रहा हूँ।

मूल शब्दः सत्य, संतोष, अहिंसा, कर्म की महत्ता, प्रेम

पंद्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में देश में उथल–पुथल का वातावरण था। क्रांतिचेता कबीर ने सामाजिक चेतना जगाने के लिए काफी संघर्ष किया और अपने उपदेशों से समाज को बदलने का पूरा प्रयास किया। सांप्रदायिक भेद–भाव को समाप्त करने और जनता के बीच खुशहाली लाने के लिए कबीर अपने समय के प्रकाश स्तंभ साबित हुए। अनेक अन्तर्विरोध के युग में कबीर जन्मे थे। कबीर के व्यक्तित्व को सभी अर्न्तविरोधों ने प्रभावित किया किंतु उन्होंने समन्यवादी दृष्टिकोण अपनाया। 'परिस्थितिजन्य परिवेश की प्रतिकूलता में भी कबीर में निर्णय की अभूतपूर्व क्षमता थी। वह आत्मचिन्तन से प्राप्त निष्कर्षों को कसौटी पर करने में कुशल थे। प्रचलित धारणाओं के अनुसार, मस्तमौला कबीर संत रामानन्द जी के शिष्य थे।'

'कबीर की जन्मतिथि के संबंध में मतांतर हैं, पर अधिकतर लोग इस बात पर सहमत हैं कि विक्रम सम्वत् के अनुसार पन्द्रवीं शताब्दी के आसपास ही इनका जन्मकाल है।' जन्मस्थान के संबंध में भी मतांतर है। कोई काशी, कोई मगहर तथा कोई बलहरा गाँव (आजमगढ़) मानता है। ''कबीर की रचनाओं को मुख्यतः तीन श्रेणीयों में विभक्त किया जाता है–

1. रमैनी, 2. सबद और 3. साखी। 'रमैनी' और 'सबद' गाए जानेवाले गीत या भजन के रूप में प्रचलित हैं।' 'साखी' शब्द साक्षी शब्द का अपभ्रंश है। इसका अर्थ – 'आँखों देखी अथवा भली प्रकार समझी हुई बात।' कबीर की साखियाँ दोहों में लिखी गई हैं जिनमें भक्ति व ज्ञानपरक उपदेश हैं। 'कबीर ने मानवतावादी तत्वग्राही व्यक्तित्व से मजहबी, वर्गगत अहंकार तथा आचार संहिता की जकड़न में उलझा देनेवाले तत्वों को भुलाकर त्याग दिया। कबीर नैतिकता से विकसित भगवत प्रेम में मानव कल्याण समझते हैं।' कबीर की दृष्टि में यही मानवता का मूल आधार है। कबीर जीवन का चरम लक्ष्य परमतत्व की प्राप्ति मानते हैं। इस तत्व को प्राप्त करने का प्रमुख साधन ज्ञान और प्रेम है। उनके अनुसार ज्ञान का तात्पर्य शास्त्र ज्ञान के अंहकार से मुक्त व्यक्ति के सहज ज्ञान से है। इस तरह प्रेम का सहज रूप ही उन्हें मान्य है। कबीर ने धर्म, अध्यात्म और दर्शन के समन्वय का संदेश दिया है।

शोध पत्र

हिन्दी साहित्य में निर्गुण संत साहित्य व विशिष्ट योगदान रहा है। इन संतों ने जनमानस में व्याप्त बुराईयों का विरोध किया तथा मानव मन के परिष्कारों की भरपूर कोशिश की। आज का युग प्रदूषण का युग है और सबसे बड़ा खतरा वैचारिक प्रदूषण का है।

यह भारत भूमि शस्यष्यामलाम् हैं जिसने समय पर अनेक महापुरूषों को जन्म दिया। राम, कृष्ण, बुद्ध, गांधी, कबीर, महावीर को इस देश ने जन्म दिया यहाँ सिकन्दर, हिटलर हलाकू नहीं पैदा हुये। कबीर पर बात कहते हुये सबसे पहले मुझे भतृहरि का श्लोक याद आता है–

जयन्ति ते सुकृतिनःरस सिद्ध कवीश्वराः
नास्ति येशां यशः काय जरा मरणश्च न भयम्।

अर्थात उन रस सिद्ध कवियों की जय हो जय हो जिनके यश रूपी शरीर को न तो वृद्धावस्था का भय होता है न मृत्यु का।
कबीर के साहित्य का केंद्र मानव है, ये संत जनता के कवि थे जनता से निकले थे और जनता के कल्याणर्थ ही अपनी बात कह रहे थे। उनके वाणियों में जनमानस के लिए हर प्रश्नों का उत्तर मौजूद है, वैसे देखा जाये तो संसार में सभी कुछ नश्वर है, परन्तु मानवीय मूल्य शाश्वत है, जब तक ये मूल्य है, मानवता जीवित रहेगी इन्हीं मानवीय मूल्यों को निर्गुण संत कबीर प्रतिस्थापित करना चाहते थे। अरबी कुरान में कबीर का अर्थ है। 'महान' अर्थात कबीर अरबी शब्द है।
कबीर साहित्य सत्यं, शिव और सुंदर से परिपूर्ण है। कबीर निरक्षर थे, उन्होंने स्वयं कहा है 'मसि कागद छुओं नहीं कलम गह्यों नही हाथ' परन्तु उनके हृदय में जनमानस की पीड़ा की छटपटाहट थी, वहीं दर्द उनके विद्रोह के रूप में फूट पड़ा, तभी तो वे कहते है–

देखो रे जग बौराना साधु देखो रे जग बौराना,
हिंदु कहै राम हैं मेरा, मुसलमान रहिमाना।
आपस में दाउ लरै मरत हैं भेद न कोउ जाना।

काव्य का जन्म ही करूणा और क्रोध से हुआ है। वाल्मीकि इसका उदाहरण है कबीर के काव्य का मुख्य स्वर क्रांति है, वे मानव के हृदय परिवर्तन के द्वारा क्रांति लाना चाहते थे इसलिये उनमें साहित्य में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा दिखाई देती है।

सत्यः– सत्य की धर्म है सत्य वह नहीं जो मुख से बोलते है, सत्य व श्रेष्ठ है, जो मनुष्य के कल्याण के लिए बोला जाता है, इसलिए वे सत्य व्यवहार, सत्य कर्म, सत्य वचन, सत्य अनुभूति पर जोर देते है। समाज यदि सत्य के महत्व को समझते तो पांखड़ और आडम्बर के दर्शन नहीं हो सकते इसलिए वे कहते है कि–

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके ह्रदय साँच है, ताके ह्रदय आप।।

आज भी झूठ की प्रशंसा और सत्य छटपटाता दिखाई देता है, कबीर भी अपने युग में सत्य और झूठ का संघर्ष देख रहे थे। हमारे मस्तमौला संत कबीर चुप नहीं बैठ सकें और झूठ और सत्य को इस प्रकार प्रकट कर दिया।

साँचे कोई न पतिजई, झुठ जग पतयाय।
गली–गली गोरस फिरै, मदिरा बैठ बिकाय।।

कबीर का व्यक्तित्व निर्भीक एवं विद्रोही था, वे उस चौरस्ते पर खड़े अपनी खुली आँखों से देखते थे और जो भी बाते वे कह रहे थे स्वातुभूत सत्य पर आधारित थी। तभी तो उनके जीवनकाल में उनके चाहनेवालों की भीड़ लग गई थी और संसार रूपी बाजार में खड़ें वे सभी की खैर मांग रहे थे–

कबीरा खड़ा बाजार में मांगे सबकी खैर।
न काहुँ से दोस्ती ना काहुँ से बैर।।

संतोष

कबीर ये जानते थे कि मनुष्य की इच्छाएँ उन्नत है, जो तृप्त होने का नाम नहीं लेती। नित्य नया रूप धारण करती रहती है। तृश्णावान मनुष्य, कभी सुखी नहीं हो सकता इसलिए तो प्राचीनकाल से आज तक शोषक और शोषितों के बीच संघर्ष बना हुआ है, तभी तो कबीर कहते है–

सहज मिलै सो दूध सम, मांगे मिले सो पानि।
कहै कबीर वह रक्त सम जा मे ऐंचा तानि।।

इन पंक्तियों में क्या समाज वादी दृष्टि नहीं? क्या कबीर कोई मार्क्सवादी से कम लगते है, आज शोषण के खिलाफ मंचों पर आवाज उठाई जा रही है, परन्तु कबीर तो साधारण लोगों को समझा रहे थे, इसके लिए जरूरी था मनुष्य अपनी आवश्यकताएँ कम करें। जब आवश्यकताएँ कम हो जायेगी तो अपने आप वर्ग संघर्ष में कमी आ सकती है, तभी तो कबीर कहते है–

साँई इतना दीजिये जामे कुटंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ साधु ना भूखा जाय।।

इन पक्तियों में अपरिग्रह के साथ संतोष का भाव भी दिखाई देता है।

अंहिसा

'मनसा वाचा कर्मणा' किसी को क्षति न पहुंचाना अहिंसा है। पूर्ण अहिंसा का अर्थ है प्राणीमात्र के प्रति दुर्भाव का पूर्ण अभाव। सत्य के साथ अंहिंसा ही संसार में सबसे बड़ी शक्ति हैं परन्तु अहिंसा कायरपण नहीं है। गांधीजी ने एक बार कहा था ''जहाँ सिर्फ कायरता और हिंसा के बीच किसी एक के चुनाव की बात हो तो मैं हिंसा के पक्ष में रहूंगा।'' उस युग में मांसाहार का बहुल प्रचलन था यहाँ तक कि तांत्रिक द्वारा भी मांस मदिरा का सेवन किया जाता था। मांसाहारियों की निंदा करते हुये वे कहते है कि–

बकरी पाती खात है, ताकि काढ़ी खाली।
जो नर बकरी खात है, ताकों कौन हवाल।।

कबीर चूँकि संत थे और संत की व्याख्या ही है, जो सदआचरण वाला हो। ये संत मनुष्य तो क्या पशु पक्षियों तथा पेड़, लता, तक के प्रति भी अहिंसा का भाव रखते थे। उनकी करूणा तो अखण्ड ब्रम्हाण्ड के प्रति है तभी तो फूल पत्तियों तक को तोड़ने के लिए मना करते है।

ब्रम्हा पाती विष्णु डारी, फूल शंकर देव।
तीन देव प्रत्यक्ष तोडियै, करियै किसकी सेवा।।

यह समाज कमजोरों दुर्बलों को नहीं जीने देता हर युग में इनका शोषण होता रहा है कबीर विषुद्ध मानवतावादी थे। उनका साहित्य मानवता से ओतप्रोत था, किसी दीन दुर्बल को दुख देखकर उनका ह्रदय आहत हो जाता है जिन कबीर को विद्रोही कहते है वे किस करूणा से कह रहे है कि–

दुर्बल को न सताइये, जा की मोठी हाय।
मरे बैल के चाम से, लौह भस्म हो जाय।।

कर्म की महत्ता

कबीर को फक्कड़ क्रांतिकारी कवि कहा जाता है, परन्तु कबीर सहज से ह्रदय को परिवर्तित करना चाहते है वे व्यष्टि के माध्यम से समष्टि का परिष्कार करना चाहते थे, इन संत कवियों को यद्यपि निवृतवादी कहा जाता है, परन्तु यदि उनका जीवन दर्शन देखा जाये तो उन्होंने कर्म की महत्ता स्थापित की। कबीर आजीवन कपड़ा बुनते रहे, इन कवियों का जीवन इस बात का प्रतीक है, कि कोई भी व्यवसाय नीच नहीं है, इन संतों ने छोटे से छोटे व्यवसाय को अपनाकर जीवन में श्रम करके उदर निर्वाह करें, वे स्वस्थ्य तथा आत्मनिर्भर समाज को देखना चाहते थे ऐसा समाज जिसका कोई भी व्यक्ति परमुखापेक्षी नहीं यही उनका मानवतावाद था।

प्रेम

कबीर का व्यापक धर्म प्रेम था, प्रेम ह्रदय जगत का व्यापार है, अतः मस्तिष्क से उसका कोई संबंध नहीं है सच्चा प्रेम कामना रहित होता है, प्रेम जगत में ऊँच–नीच, धनी–निर्धन, महान–शुद्ध का कोई भेद भाव नहीं है, उनकी दृष्टि में प्रेम ही धर्म है तभी तो वे कहते है।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय।
ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।।

प्रेम रस तो ब्रम्हानंद के समकक्ष है जो इस रस का पान कर लेता है फिर मुक्ति भी उसके लिय त्याज्य हो जाती है।
कबीर जैसे निर्गुण संतों का मानव धर्म है जिसका केंद्र मानव होने के कारण संत साहित्य जगत् में प्रेम–घृणा, आष और वेदना का दर्पण है, यह कबीर जैसे प्रखर कवि की कोमल तथा प्रबल भावनाओं का प्रतिबिम्ब है। मानव मात्र में एकता स्थापित करने के लिए इन संतों ने महत् प्रयास किया आज हिन्दु मुस्लिम एकता की बात कही जा रही है, परन्तु क्या कोई नेता इतनी हिम्मत से कह सकता है, जो निर्गुण संतों में से ही एक संत पलटूदास ने कहीं थी।

दोनों भाई हाथ पग, दोनों भाई कान।
दोनों भाई नैन है हिन्दुओं मुसलमान।।

आधुनिक युग में जब मनुष्य सभ्यता के उच्चतर सोपानों पर पहुंच रहा है, परन्तु उसका मन कहीं न कही आदिम अवस्था के खूंखार भावों को पाले है, जैसा कि दिनकर ने कहा ही है–

झर गई पूछ रोमांत पषुता का झरना बाकी है
बाहर–बाहर तन संवर चुका, अभी मन का संवरना बाकी है।।

और इस मनको संवारने का काम हमारे कबीर जैसे निर्गुण संतक र रहे थे। आज हम देख रहे है कि, सारा समाज स्वार्थ का अखाड़ा बन गया है। हम सब एक अंधी दौड़ में शामिल हो गये है। भौतिक सुखों को प्राप्त करने के लिए बेतहाशा भागे जा रहे है, इस स्पर्धा में उदात्तभाव और मानवीय मूल्य खोते जा रहे है, ऐसे समय कबीर साहित्य हमें कहीं न कहीं एक स्वस्थ दृष्टि प्रदान कर रहा है। आज भी वे जनमानस को प्रभावित करते है, वे मानव को कुछ करने को प्रेरित कर रहे है उनकी पंक्ति जो मानव जीवन को एक संदेश है। –

कबीरा हम पैदा हुये जग हँसा हम रोय।
ऐसी करनी कर चलों हम हँसे जग रोय।।

निष्कर्ष

इस शोध पत्र का विषय निर्गुण साहित्य का जनमानस पर प्रभाव यह एक विस्तृत विषय है, मैं तो कहूँगा कि शताब्दियों के बाद भी यह साहित्य जन जन का कंठहार है। आज भी रावण का पुतला जलाया जाता है, आज ढ़ाई अक्षर प्रेम का, घर का भेदी लंका ढ़ाय, कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, परहित सरिस धरम नहीं भाई, चुगली करने वाले को मंथरा, प्राण जाये पर वचन न जाई, दुख में राम के वनवास का उदाहरण आज भी दिया जाता है। अपने बच्चों का नटखट रूप कृष्णरूपम, विदेश में बसने वाले की व्यथा उधौं मोहि ब्रज बिसरत नाहि आदि काव्य पंक्तियाँ क्या शिक्षित या अशिक्षित सभी की जबान पर मौजूद है भारतीय संस्कृति की जीवित रखने तथा सामाजिक मर्यादा को बनाये रखनें में इन निर्गुण सगुण कवियों का विशेष योगदान है। जब तक भारत में नैतिक मूल्य जीवि है, तब तक यह साहित्य शाश्वत है कहा भी गया है कि –

तत्व तत्व सूरा कही, तुलसी कही अनूठी।
शेष बची कबीरा कही, बाकी कही सो झूठी।।
इन सब संत और भक्तों को शत्–शत् प्रणाम।

संदर्भ सूची

1. कबीर ग्रन्थावली– श्यामसुन्दरदास, पृष्ठ 191
2. कबीर ग्रंथावली– सं. पारसनाथ तिवारी, पृष्ठ 109
3. संतवाली संग्रह भाग 2, पृष्ठ 83
4. पलटूदास की वाणी, पृष्ठ 77